॥ श्री ॥

प्रवचनसार

PRAVACHANASAARA

आ. कुन्दकुन्द · २वीं शती · अभिलेख ४/९०

श्री जिनचन्द्राचार्य → **आ. कुन्दकुन्द** → श्री उमास्वामी (गृद्धपिच्छाचार्य)

संक्षिप्त परिचय

आचार्य कुन्दकुन्द की प्रमुख कृति — ज्ञान, ज्ञेय और चरणानुयोग (आचरण) — इन तीन महाधिकारों में जिन-प्रवचन का सार।

शुद्धोपयोग की महिमा और मुनि-धर्म का हृदयग्राही निरूपण इसकी विशेषता है; अमृतचन्द्र और जयसेन की संस्कृत टीकाएँ तथा पं. हेमराज पाण्डेय की वचनिका उपलब्ध हैं।

— सम्पादकीय परिचय; नीचे की तालिका-सामग्री मूल स्रोतों से अक्षरशः है। · Editorial summary; all list data is verbatim from the sources.

अभिलेख-विवरण

प्रवचनसार — दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के ९० प्रमुख प्राचीन ग्रन्थों की कालानुक्रमिक सूची में क्रमांक ४ पर अंकित ग्रन्थ है। रचयिता आ. कुन्दकुन्द; रचना-काल २वीं शती (लगभग)। आचार्य-समयानुक्रमणिका (क्रमांक ६५) के अनुसार इनका समय १२७–१७९ है तथा गुरु श्री जिनचन्द्राचार्य। वहाँ इनकी विशेषता/प्रधान कृति के रूप में "समयसारादि ८४ पाहुड" उल्लिखित है। इसी लेखनी से समयसार, पंचास्तिकाय, नियमसार, अष्टपाहुड, बारस अणुवेक्खा भी इस सूची में सम्मिलित हैं। समकालीन ग्रन्थों में षट्खण्डागम, कसायपाहुड, मूलाचार, तत्त्वार्थसूत्र परिगणित हैं।

इसी लेखनी से

समयसार · पंचास्तिकाय · नियमसार · अष्टपाहुड · बारस अणुवेक्खा

समकालीन ग्रन्थ

षट्खण्डागम · कसायपाहुड · मूलाचार · तत्त्वार्थसूत्र

सम्पूर्ण ग्रन्थ पढ़ें

जैन ग्रन्थ लाइब्रेरी ↗ · जैनकोश ↗ · Archive.org ↗

बाह्य ग्रन्थालयों में खोज — नई टैब में खुलेगी

प्रमाण: ९०-ग्रन्थ सूची-पोस्टर, पंक्ति ४ — मूल छायाचित्र

← समयसार

पंचास्तिकाय →